धर्मशास्त्रम्

CC-7_Sec-A_Unite-II

धर्मः

०१

व्युत्पत्तिः –

धृ + मन्-प्रत्ययः

०२

साधारणलक्षणम्

ধ্রিয়তে লোকঃ অনেন ইতি ধর্মঃ। যার দ্বারা লোকসমূহকে ধারণ করা হয়। তাহাই ধর্ম।

०३

विशेषलक्षणम्

वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः। (अ.सं.) বেদ প্রতিপাদিত প্রয়োজন রূপ অর্থবিশিষ্ট যা কিছু সেটাই ধর্ম।

चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः। (जै.सू.१।१।२) (মানুষের যার দ্বারা ক্রিয়াতে প্রবৃত্তি হয় তাহাই ধর্ম।)

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥ २.१२॥ (मनुसंहिता)

► **বেদ, স্মৃতি, সদাচার ও আত্মতুষ্টি এই চারটিকে ঋষিগণ ধর্মের সাক্ষাৎ লক্ষণ বলে থাকেন।**

► **বেদ** – ঋক,সাম,যজুঃ,অথর্ব। ► **স্মৃতি** – ধর্মশাস্ত্র।

► **সদাচার** – সৎ লোকের ব্যবহার। যেমন – ব্রহ্মণ্যতা, দেবপিতৃভক্ততা, সৌম্যতা, অপরোপতাপিতা, অনসূয়তা, মৃদুতা, অপারুষ্যতা, মৈত্রতা, প্রিয়বাদিতা, কৃতজ্ঞতা, শরণ্যতা, কারুণ্যতা, শান্তি।

► **আত্মতুষ্টি** – পরস্পর বিপরীত ক্যে কোনো একটির পক্ষ অবলম্বন করে সন্তুষ্ট থাকে।

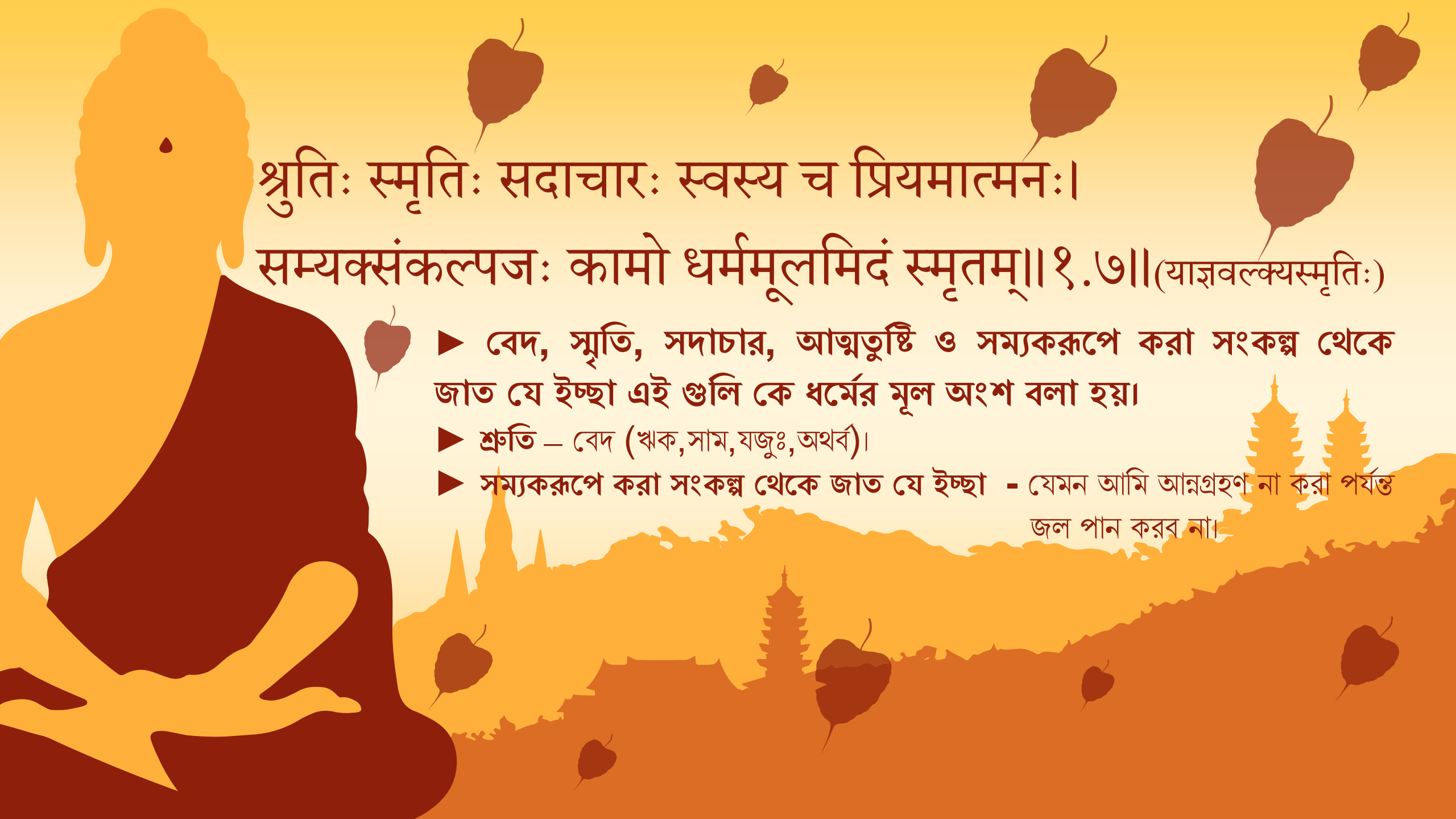

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
सम्यक्संकल्पजः कामो धर्ममूलमिदं स्मृतम्॥१.७॥(याज्ञवल्क्यस्मृतिः)

► **বেদ, স্মৃতি, সদাচার, আত্মতুষ্টি ও সম্যকরূপে করা সংকল্প থেকে জাত যে ইচ্ছা এই গুলি কে ধর্মের মূল অংশ বলা হয়।**

► **শ্রুতি** – বেদ (ঋক,সাম,যজুঃ,অথর্ব)।

► **সম্যকরূপে করা সংকল্প থেকে জাত যে ইচ্ছা** - যেমন আমি আন্নগ্রহণ না করা পর্যন্ত জল পান করব না।

सामाजिक-नैतिकतार्थे विविधप्रकाराः धर्मः

मनुस्मृतिः

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः॥१०.६३॥

ব্রাহ্মণ-ক্ষত্রিয়-বৈশ্য-শূদ্র এই ৪ বর্ণের সকল মানুষের সামান্য ধর্ম হল – অহিংসা, সত্য, অস্তেয়, শৌচ ও ইন্দ্রিয়নিগ্রহ।

विष्णुस्मृतिः

क्षमा सत्यं दमः शौचं दानमिन्द्रियसंयमः।
अहिंसा गुरुशुश्रूषा तीर्थानुसरणं दया॥ २.१६॥

आर्जवं लोभशून्यत्वं देवब्राह्मणपूजनम्।
अनभ्यसूया च तथा धर्मः सामान्य उच्यते॥ २.१७॥

* ক্ষমা, সত্য, দণ্ড, শৌচ, দান, ইন্দ্রিয়সংযম, অহিংসা, গুরুসেবা, তীর্থভ্রমণ, সরলতা, লোভশূন্যতা, দেবতা ও ব্রাহ্মণ কে পূজা, অপরের গুণে দোষ না দেখা প্রভৃতি কে সামান্য রূপে ধর্ম বলা হয়।

कर्तव्यदिशा षड्विधः धर्मः मिताक्षरायाम्

अत्र धर्मशब्द षड्विधस्मार्तधर्मविषयः। तद्यथा – वर्णधर्मः, आश्रमधर्मः, वर्णाश्रमधर्मः, गुणधर्मः, निमित्तधर्मः, साधारणधर्मश्चेति। तत्र वर्णधर्मो ब्राह्मणो नित्यं मद्यं वर्जयेदित्यादिः। आश्रमधर्मोऽग्नीन्धनभैक्षचर्यादिः। वर्णाश्रमधर्मः पलाशो दण्डो ब्राह्मणस्येत्येवमादिः। गुणधर्मः शास्त्रीयाभिषेकादिगुणयुक्तस्य राज्ञः प्रजापरिपालनादिः। निमित्तधर्मो विहिताकरणप्रतिषिद्धसेवननिमित्तं प्रायश्चित्तम्। साधारणो धर्मः अहिंसादिः " न हिंस्यात्सर्वभूतानि " इत्याचण्डालं साधारणो धर्मः। 'शौचाचारांश्च शिक्षयेत्" इत्याचार्यकरणविधिप्रयुक्तत्वाद्धर्मशास्त्राध्ययनस्य प्रयोजनादिकथनं नातीवोपयुज्यते ॥ तत्र चायं क्रमः प्रागुपनयनात्कामचारकामवादकामभक्षाः । ऊर्ध्वमुपनयनात्प्राग्वेदाध्ययनोपक्रमाद्धर्मशास्त्राध्ययनम्, ततो धर्मशास्त्रविहितयमनियमोपेतस्य वेदाध्ययनम्, ततस्तदर्थजिज्ञासा, ततस्तदनुष्ठानमिति ॥ तत्र यद्यपि धर्मार्थकाममोक्षाः शास्त्रेणानेन प्रतिपाद्यन्ते, तथाऽपि धर्मस्य प्राधान्याद्धर्मग्रहणम् । प्राधान्यं च धर्ममूलत्वादितरेषाम् । न च वक्तव्यं धर्ममूलोऽर्थोऽर्थमूलो धर्म इत्यविशेष इति । यतोऽर्थमन्तरेणापि जपतपस्तीर्थयात्रादिना धर्मनिष्पत्तिः, अर्थलेशोऽपि न धर्ममन्तरेणेति । एवं काममोक्षावपीति ॥ १.१ ॥

মিতাক্ষরাতে ছয় প্রকার ধর্ম সম্বন্ধে আলোচনা।

এখানে ধর্মশব্দ ছয় প্রকার স্মার্ত ধর্মকে বলা হয়েছে। সেগুলি হলো যথাক্রমে বর্ণধর্ম, আশ্রমধর্ম, বর্ণাশ্রমধর্ম, গুণধর্ম, নিমিত্তধর্ম, সাধারণধর্ম। বর্ণধর্ম হলো ব্রাহ্মনের নিত্য মদ্যপ বর্জন করা প্রভৃতি। আশ্রমধর্ম হলো অগ্নিস্থাপন, কাঠ সংগ্রহ করা এবং ভিক্ষাবৃত্তি অবলম্বন করা। বর্ণাশ্রমধর্ম হলো পলাশ কাঠ ব্রহ্মনের প্রভৃতি। গুণধর্ম হলো শাস্ত্রীয় দিক থেকে অভিষেক সম্পন্ন করে গুণযুক্ত রাজার প্রজা পরিপালন প্রভৃতি। নিমিত্তধর্ম হলো নির্দিষ্ট ভাবে বলা হয়েছে বা নিষেধ করা হয়েছে এমন বিধি পালন করে নিমিত্তবশত প্রায়শ্চিত্ত প্রভৃতি ধর্ম। সাধারণধর্ম হলো অহিংসা প্রভৃতি। সমস্ত প্রাণীতে হিংসা করা উচিত নয়। এইরূপ উচ্চব্যাক্তি থেকে চণ্ডাল প্রর্যন্ত সকল ব্যাক্তির সাধারণ ধর্ম।

नैतिकगुणावलिसमन्वित दशविधधर्माः

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥ ६.९२ ॥ (मनुसंहिता)

- धैर्य, क्षमा, दण्ड, अचौर्य, शुचिता, इन्द्रियसंयम, ज्ञान, विद्या, सत्य, अक्रोध এই দশটিকে নৈতিক গুণাবলী যুক্ত ধর্ম বলা হয়।

चतुर्दशधर्मस्थानम्

याज्ञवल्क्यस्मृतिः

“

पुराणन्यायमीमांसा- धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः ।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ॥ १.३ ॥

- পুরাণ, ন্যায়, মীমাংসা, ধর্মশাস্ত্র, ৬ বেদাঙ্গ, ৪ বেদ এই ১৪ টিকে ধর্ম সম্বন্ধে জানার বিদ্যাস্থান বলা হয়।

।।धन्यवादः।।